RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-04
April -2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

हिन्दी साहित्य में नारी : एक मूल्यांकन

Dr. Sushma Garg

Assistant Professor

(Corresponding Author: sushmagarg1430[at]gmail.com)

मानव इस दृष्य सृश्टि का सभी दृश्टियों से श्रेश्ठ एवम् सर्वगुण सम्पन्न प्राणी है। अन्य प्रकार के अनेकानेक जीव संसार में विद्यमान रहते हुए भी सृश्टि की सार्थकता, मानव नामक प्राणी के अस्तित्त्व से ही है। तो इसी सन्दर्भ में नारी मानव जाति एवम् जीवन का आधा भाग है।

मनुश्य के प्रादुर्भाव से लेकर वैदिक युग तक के कालखण्ड को 'प्रागैतिहासिक युग' के नाम से पुकारा जाता है। इस युग में भारत के उत्तर पष्चिम में एक उन्नत एवम् श्रेश्ठ संस्कृति–सभ्यता का उदय हुआ। इसी श्रेश्ठ संस्कृति को आज हम भारतीय संस्कृति कहते है।

आदिम युग में भारत का सामाजिक संगठन मातृसत्तात्मक था। वह भोजन पकाती, दूध दोहती और कृशि कार्यों को देखती थी। वह गृह–प्रबन्धक थी। मातृ परम्परा पर ही पीढ़ियाँ चलती थी। पुरुश षिकार करता युद्ध लड़ता और पषु पालता था। उस युग में पुरुश और नारी की मर्यादा तथा अस्तित्त्व में कोई विषेश अन्तर नहीं था। आदिम युग में नारी की स्थिति सन्तोशजनक मानी जाती थी। मातृसत्तात्मक इस समय के समाज में नारी सम्पत्ति की स्वामिनी तथा घर की सर्वोपरि षक्ति कही जाती थी।

प्राचीनकाल से लेकर अब तक नारी साहित्य का अभिन्न अंग रही है। साहित्य की कोई भी विद्या ऐसी नहीं है जो नारी के वर्णन से अछूती हो।

विभिन्न युगों में नारी के विभिन्न रूपों का वर्णन किया गया है, क्योंकि साहित्य समाज का दर्पण है और नारी समाज को सृजित व समुन्नत करने का अभिन्न अंग है। विगत युगीन साहित्य पर दृश्टिपात करने से विदित होता है कि वैदिक युग में नारी की स्थिति सन्तोशजनक ही नहीं, अपितु अति सम्माननीय भी रही थी। उसका पद बहुत ऊँचा तथा पवित्र था।

वैदिक काल में नारी को दैवीय स्थान प्राप्त था। देवी मानकर उसकी पूजा की जाती थी।

वैदिक युग में नारी की स्थिति स्वस्थ, समृद्ध तथा समुन्नत थी, उसे अपना पति चुनने के अधिकार के साथ–साथ पुर्नविवाह का अधिकार भी प्राप्त था। वैदिक युग में नारी गृहलक्ष्मी हुआ करती थी।

वहीं श्रृग्वैदिक समाज पितृसत्तात्मक होते हुए भी ....

लेकिन उत्तरवैदिक काल में आते तक, नारी का पतन होने लगा था।

हिन्दी साहित्य के सन्दर्भ में जब नारी की दषा व दिषा का मूल्यांकन किया जाता है तो आदिकालीन हिन्दी साहित्य में कवियों की नारी चित्रण प्रवृत्ति दो विपरीत आयामों को स्पर्ष करती दिखायी देती है। एक ओर सिद्ध एवम् नाथपंथियों द्वारा नारी को माया का पर्याय कहकर त्याज्य व हीन बताया गया।

दूसरी ओर रासो साहित्य के चारण कवि नारी की कमनीयता व रूप सज्जा का मुग्धकारी वर्णन कर, उसे विलसिता के चरम रूप में चित्रित कर रहे थे।

जहाँ वैदिककाल में नारी के प्रति उदात्त दृश्टिकोण देखने को मिलता है इसके विपरीत इस युग के काव्य ग्रन्थों में वेष्याओं, परकीया नायिकाओं के ऐसे चित्र भी अंकित है जो नारी की प्रतिश्ठा को ठेस पहुँचाने वाले है।

वहीं कहीं ना कहीं आदिकालीन साहित्य में नारी चित्रण का उज्ज्वल पक्ष, प्रथम तो वीरांगना रूप में व द्वितीय सती रूप में भी देखने को मिलता है।

रासाग्रन्थों एवम् आल्हाखण्ड आदि वीर गीतिकाव्यों में इस प्रकार की वीरांगनाओं के अनेक चित्र प्राप्त है।

भक्तिकाल में अधिकतर संत कवियों ने नारी के हीन व गृहित रूप को ही वर्णित किया है। उनके लिए नारी षक्ति, मुक्ति और आत्माज्ञान दूर करने वाली ही रही। उन्होंने नारी को साधना मार्ग में बाधा समझा व नारी को माया का पर्याय समझा। संत कवियों ने नारी निन्दा वस्तुतः उसके कामिनी रूप की की है, क्योंकि यह रूप मनुश्य को देह रस में निमग्न कर अध्यात्म पथ पर अग्रसर होने से रोकती है।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

संत साहित्य में जहाँ कबीर ने नारी निंदा करते हुए कहा है कि

"नारी की झाईं परत, अन्धा होत भुजंग
कबिरा तिनकी का गति, जो नित नारी के संग।"
दूसरी ओर पतिव्रता नारी की प्रषंसा में कहते है कि–
"पतिव्रता मैली भली, काली, कुचिल, कुरुप
पतिव्रता के रूप पर वारुँ कोटि सरूप।"

भक्तिकालीन हिन्दी साहित्य में प्रेममार्गी कवियों की प्रवृत्ति नारी के प्रेमिका एवम् पत्नी रूप का चित्रण करने की ओर अधिक उन्मुख रही है। पद्मावती, मधुमती, हसावली, इन्द्रावती आदि आदर्ष प्रेमिकाएँ है। यहीं नारियाँ पारिवारिक परिप्रेक्ष्य में आदर्ष पत्नियाँ सिद्ध होती है। प्रारम्भ में प्रेममार्गी या सूफी साहित्य की नारी कामोन्माद, रूप गर्व एवम् स्वार्थपरता से ग्रस्त दिखाई पड़ती है, किन्तु आगे चलकर नायक के त्याग एवम् बलिदान से सच्चे प्रेम को निभाती दिखायी गयी है।

सगुण षक्ति काव्य धारा के अर्न्तगत रचित काव्य कृत्तियों में नारी के विविध रूपों के उदात्त चित्रण देखने को मिलते है।

कृश्ण भक्त कवियों ने नारी को माता, पत्नी, प्रेमिका व पुत्री रूपों में चित्रित किया है।

रामकाव्य धारा में भी नारी के विभिन्न स्वरूपों का वर्णन देखने को मिलता है। पार्वती, अनसूया, कौषल्या, सीता उर्मिला, मन्दोदरी आदि नारी पात्र पवित्रता व धर्मपरायणता से युक्त दिखाए गए है। सीता, मन्दोदरी आदि का चित्रण आदर्ष पत्नी का सर्वश्रश्ठ उदाहरण है। तुलसीदास जी ने अपनी रामचरित मानस में नारी की षोचनीय स्थिति की झलक भी प्रस्तुत की है। जब कई जगह समाज द्वारा नारी को सहज ही मूर्ख, नासमझ और पुरुश–सेविका समझे जाने के संकेत उन्होंने दिए है।

वे कहते भी है कि–

ढोल, गँवार, षूद्र, पषु, नारी, सकल ताड़न के अधिकारी।'

रीतिकालीन साहित्य में केषव, बिहारी, मतिराम व घनानंद आदि अधिकांष रीतिकालीन कवियों ने श्रृंगार रस को ही प्रमुख रूप से अपनी रचनाओं में स्थान देकर, नारी के मांसल व वैदिक रूप का चित्रण किया हैं जहाँ रीतिकाल में केषव, मतिराम व घनानंद ने नारी को श्रृंगार रस से आँका है। वहीं बिहारी एक ऐसे कवि है, जिन्होंने नारी के रूप–सौदर्य, नख–षिख व अनेक मुद्राओं व चेश्टाओं को स्वाभाविक चित्र अंकित किया है।

बिहारी की 'सतसई' रचना में मिलन–विरह का दोहा उदाहरण रूप में प्रस्तुत है।

"कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत, लजियात
भरे मौन में करत हैं, नैनहुँ हीं सौ वात"

नवजागरण काल तक पहुँचते–पहुँचते नारी की दुर्बलता अपनी चरमसीमा तक पहुँच चुकी थी। नारी की इस हीनावस्था का सजीव चित्रण तत्कालीन साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं में किया। प्रेमचन्द के उपन्यासों में वर्णित, अधिकांष नारी पात्र इसका श्रेश्ठ उदाहरण हैं। राजनीतिक वातावरण के परिवर्तन के साथ ही नारी–जागरण आरम्भ हुआ। अंग्रेज प्रषासकों द्वारा षिक्षा–प्रचार द्वारा नारी–जीवन के बँधन कटने लगे। नारी से जुड़ी समस्याएँ बाल–विवाह, सती–प्रथा, अषिक्षा, अनमेल विवाह, पर्दा–प्रथा आदि को साहित्य का विशय भी बनाया जाने लगा। षिक्षा–सुधार के प्रयत्नों के कारण देषभर में राजनीतिक स्वतन्त्रता के आन्दोलनों में नारी भी पुरुश के समान आने लगी। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पष्चात् भारतीय नारी षिक्षा, राजनीति, न्याय, प्रषासन आदि क्षेत्रों में भी आगे आ चुकी है। श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डित, हँसा मेहता, इन्दिरा गाँधी, किरण बेदी, कल्पना चावला आदि नारियाँ विभिन्न क्षेत्रों में अपनी पहचान बना चुकी हैं।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि देष की बदलती परिस्थितियों के साथ–साथ नारी–जीवन भी परिवर्तित होता रहा है। ठीक उसी के अनुरूप साहित्य में वर्णित उसका स्वरूप भी बदलता रहा है। आदि एवं मध्यकालीन हिन्दी काव्य में चित्रित नारी के विविध रूप उसके जीवन के उत्कृश्ट एवं निकृश्ट दोनों छोरों की ओर निर्देष करते है। आधुनिक काल में परिवर्तित परिस्थितियों के साथ–साथ साहित्य में भी कविता (काव्य) के साथ–साथ अन्य गद्य विधाएँ आरम्भ हो गई। मन्नू भण्डारी, प्रभा खेतान, कृश्णा सोबती, चित्रा मुद्गल, मैत्रेयी पुश्पा, महादेवी वर्मा आदि लेखिकाओं ने नारी के अनेक रूपों को अपनी रचनाओं में स्थान दिया। नारी उत्पीड़न, षोशण, अत्याचार, अनाचार व अन्याय से जूझती हुई नारियों को साहित्य का विशय बनाया जाने लगा। आधुनिक युग में साहित्य की कोई भी विधा ऐसी नहीं है, जो नारी वर्णन से अछूती हो। अब नारी स्वरूप पूर्णतया परिवर्तित हो चुका है, वह स्वरूप चाहे समाज में हो, चाहे साहित्य में। आज जीवन के हर क्षेत्र में वह कहीं पुरुश से आगे है, तो कहीं उसके कदम से कदम मिलाती नज़र आती है। यहाँ तक कि संविधान में भी उसे पूरे अधिकार दे दिये गए है।

आधुनिक कथा साहित्य में महिला लेखिकाओं का योगदान अभूतपूर्व रहा है। इनकी रचनाओं में पारिवारिक और सामाजिक परिवेष में नारी के मन की घुटन एवं टूटन, दाम्पत्य जीवन को विघटित करने वाले कारण, अनुभूति की गहराई

और नारी मूल्य को उभारने की क्षमता अभिव्यक्त हुई है। मन्नू भण्डारी, कृश्णा अग्निहोत्री, कुसुम अंसल, चित्रा मुद्गल, पुश्पा बंसल, षषिप्रभा, उशा प्रियवंदा, ममता कालिया, राजेन्द्र यादव, षिवानी, राजी सेठ आदि साहित्कारों ने नारी के विविध रूपों को अपनी कृतियों में वर्णित किया है। कृश्णा अग्निहोत्री की नारी षिक्षिता, अर्जन–कार्य को विवष वह नारी है, जो अत्यन्त सजग है, कमर्ठ है, परन्तु अपनी अर्जना पर उसका स्वयं का अधिकार नहीं है। साठोत्तरी कथा–साहित्य में वर्णित नारी अपने बौद्धिक, भावात्मक और पारिवारिक अस्तित्व के प्रति अत्यन्त सजग है तथा उसके उत्पीड़न व अभावों के लिए वह किसी को क्षमा नहीं करती। वह अपनी स्वतन्त्रता, अस्मिता, पुरुश के साथ समानता की इच्छुक है। अपने अधिकारों के प्रति सजग है। वह आत्मनिर्भता की राह अपनाना चाहती है। लेकिन कहीं–कहीं पर वह फिर भी पुरुश के सामीप्य की इच्छुक है। पति की अवहेलना उसे पूर्व प्रेमी की ओर उन्मुख कर देती है। षषिप्रभा की कहानियों में, नारी की इसी मानसिकता का विष्लेशण किया गया है।

नारी के विभिन्न यथार्थरूपों की अभिव्यक्ति के साथ–साथ कवियों ने उसे सामाजिक आदर्ष की उच्चतर मनोभूमि पर भी अधिश्ठित किया है। उसे आदर्षमयी बनाकर भारत की पथ–प्रदर्षनी बनाने का भी प्रयत्न किया है। उसे देष, समाज व परिवार सबके लिए षक्ति, ज्योति और सिद्धि का प्रतीक माना है। जयषंकर प्रसाद की निम्न पंक्तियों में नारी का स्वरूप पूर्णतः परिलक्षित होता है–

"नारी, तुम केवल श्रद्धा हो, विष्वास–रजत–नग पगतल में
पीयूश–स्त्रोत–सी बहा करो, जीवन के सुन्दर समतल में।"
(कामायनी, लज्जा सर्ग से)

आधुनिक नारी को श्रद्धा की पात्र होने के साथ–साथ बौद्धिक विचारभूमि पर भी अवतरित किया गया है। आत्मसम्मान, सामाजिक प्रतिश्ठा और अपने अधिकारों के लिए आज भी वह पुरुश से संघर्शरत दिखाई देती है। आत्मनिर्भर जीवन व्यवस्था में उसकी आस्था है।

अतः जब प्राचीन साहित्य, संस्कृत साहित्य व हिन्दी साहित्य का मूल्यांकन किया जाता है तो भारत के प्राचीन साहित्य में वर्णित नारी की स्थिति एवम् स्वरूप जहाँ हमें नारी के प्रति नमन करने को विवष करता है, वहीं नारी के प्रति किए गये तिरस्कार एवम् अपमानों के कारण पुरुशों को कटघरे में भी खड़ा करता है। कई–कई स्थानों पर समूची पुरुश जाति को सिर नीचा खड़ा होने पर भी बाध्य करता है। प्राचीन साहित्य में इस नमन करने योग्य नारी को, जहाँ स्वर्ण बिन्दुओं से सजाया गया है, वहीं नारी के कटे–फटे एवम् ध्वस्त रूप को भी साहित्यकारों ने भारी मन से रेखांकित किया है। उपर्युक्त विवेचन से स्पस्ट है कि अनादिकाल से ही युग परिस्थितियों एवम् चेतनाओं के अनुसार ही साहित्य में नारी की चित्रण किया गया है। अतः साहित्य और नारी के बिना राश्ट्र की सभ्यता संस्कृति निर्जीव है।

सन्दर्भ–सत्र

1. यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते देवता–मनुस्मृति
2. जयषंकर प्रसाद, लज्जा सर्ग पृ0 84
3. तुलसी रामचरितमानस, बालकाण्ड् पृ0 120
4. डॉ0 गजानन षर्मा, प्राचीन भारतीय साहित्य में नारी, पृ0 60
5. वाल्मीकि रामायण
6. आचार्य रामचन्द्र षुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास
7. आचार्य नगेन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास
8. भारतीय नारी दषा एवम् दिषाः आषा रानी व्होरा
9. भारतीय नारीः कल, आज और कल– सरोज कुमार गुप्त